प्र० 'मधुरमनि' शीर्षक गल्पमे निहित भावक समीक्षा करू।

श्री काशीनाथ झा 'किरण'क जन्म २८.१२.१९०६ई० क दरिभंगा जिलाक पोस्ट लोहनारोड अन्तर्गत धर्मपुर गाम मे भेल। सम्प्रति ई ल० ना० मि० विश्वविद्यालय, दरिभंगामे मैथिली विभागक प्राध्यापक पद पर आसीन छलाह। साहित्यिक विभिन्न विधामे हिनक रचना प्राप्त होइत अछि– की कथा, की कविता, की आलोचना, की नाटक, की निबंध सभमे। यद्यपि किरण जी अपन व्यस्तताक कारणेँ मैथिली साहित्यक भण्डार केँ नहि भरि सकलाह अछि, तथापि 'चन्द्रग्रहण' सनक लघु उपन्यास, 'विजेता विद्यापति' सनक नाटक, बाल साहित्यक रूपमे 'ध्रुव' एवं 'अभिमन्यू' तथा 'जय जन्मभूमि' एकांकी हिनक अलौकिक प्रतिभाकेँ उजागर आ' विशिष्ठता केँ प्रस्फुटित करैत अछि। संगहि हिनक हृदय-स्पर्शी कविता एहि तथ्यक परिचायक अछि जे ई एक गोट पैघ कविक रूपमे हमरा समक सोझामे सेहो उपहारस्वरूप प्रस्तुत छथि। मातृभाषा मैथिलीक कर्मठ सेवी श्री किरण जी समाजसेवी एवं आन्दोलनकर्त्ता सेहो छथि।

प्रस्तुत कथा 'मधुरमनि' मैथिली कथा-साहित्यमे किरण जीक एकटा विलक्षण देन छन्हि। ई कथा १९६२ ई०मे 'मिथिला मिहिर' मे प्रकाशित भेल छल। ओना 'करूणा' आओर 'इहो चारि खून किरैक' हिनक विशिष्ठ कथा मानल जाइत अछि, मुदा एहि सँ फराक 'मधुरमनि' पति-पत्नीक मधुर भावक वर्णन, मनुष्यक पारिवारिक क्रिया-कलापक कारणेँ उठल मानसिक द्वन्द्वताक चित्रण तथा वर्तमान समाजक एवं सामान्य वर्गक पारिवारिक स्थितिक मृदु चित्रण करबामे एकटा आदर्श कथा मानल जाइत अछि।

एहि कथाक नायक छल नाङ्ड़ मोचन आ' नायिका छलि मधुरमनि। ओना मोचन नाङ्ड़ छल, मुदा ताहि सँ ओकर पत्नी केँ करवनहुँ मोचनक प्रति घृणाक भाव जाग्रित नहि होइत छल। अपंग पुरुष मोचन दरबज्जा पर बैसल-बैसल हस्तकला करैत अछि– जौड़ बाँटब, पटिया बीनब, बाड़ीमे खुरपी ... कड कमाएब आदि। मोचनक गुजर चलैत छलैक पत्नी मधुरमनिक कमाइ पर। एहि क्रममे एक दिनक घटना थिक जे भूख सँ आकुल मोचन अपन पत्नी सँ पुछलकैक–"मानस भेलै?" त' मधुरमनि बड़ जोर सँ झमकौरने रहैक– "काज ने धंधा, तीन रोटी बंधा!" एहि बातसँ मोचनक हृदयकेँ वेश आघात पहुँचल आ' अपंग रहितहुँ ओकरा हृदयमे पुरुषत्वक भाव आबि जाइत अछि

एवं ओ स्टेशन दिसि चुपचाप विदा भऽ जाइत अछि। विविध प्रकारक विषय-वस्तु सभ ओकर मोनमे उठए लागल – "नै काज करए हएत त' धीया पूताकेँ खेलाओल थथमारल होयत कि नै। मारए मुँह एहन जीवन केँ।" एहि ठाम कथाकार श्री किरण जी पुरुषक पुरुषत्व पर कतेक सुन्दर ढंगसँ दृष्टिपात करने छथि जे मोचनक नाङ्ड़ रहितहुँ ओ स्त्रीक वशीभूत नहि होमय चाहैत छल, किऐक त' ओ मर्द छल, मौगी नहि। प्रकृतिक विडम्बना जे ओ नाङ्ड़ छल, बाम हाथ सुखाएल अछि, ताहिक अर्थ ई नहि जे ओहि पुरुषक पुरुषार्थो सुखाऽ गेल होइक।

एम्हर स्त्री जातिक स्वभाव देखबामे अबैछ जे एक दिसि तँ अक्कचह मए मधुरमनि अपन पति मोचन केँ फकफारि देलक, ततहि दोसर दिसि सागकेँ सेहो तीव्रतासँ फाड़ि रहल छलीह, किऐक त' ओकर मोनमे पतिक भूखल पेट चित्कार कऽ रहल छैक। एक त' हृदय आ' ओहिमे स्त्रीक। मधुरमनि ततेक विचलित भऽ गेलीह जे ओकरा बूझि पड़ैत रहैक जे कालियो आइ पाथर भऽ गेलैक। मधुरमनिक पतिव्रताक एकटा झाँकी कथाकार आओर प्रस्तुत करने छथि जखन सतना माय प्रवेश करैत कहैत अछि – "बाजलहक तँ कोन बेजाय केलहक। कोनो जोकरक तँ नै। कपार पर बथाएल छलहु तोरा ई। नै कमाएल होइ छै तँ भीखो माडि लाओत सेहो नै?" मधुरमनि केँ सतना मायक ई गप्प छक दऽ लगलैक जेना गर्म लोहा पानिमे दऽ देला पर होइत छैक एवं आक्रोश व्यक्त करैत मधुरमनि सतना मायकेँ नीक-बेजाए कहैत तथा व्यंग्य करैत कहैत अछि – "पहिलका पहलमान लऽ कऽ हम की करब जे भरि दिन डेङबैत रहत। हमरा तँ एकटा कथो नै कहियो कहैए।" सतना माय दुखी भेल चलि जाइत अछि। ओकरा वृद्धावस्थामे घरवाला बड्ड मारैत छलैक।

मोचन जे स्टेशन दिसि विदा भेल छल, रस्तामे मानसिक द्वन्द्वता सँ ग्रस्त भऽ सोचैत अछि जे हम त' छी अपंग, हमरा नौकरी मे के राखत, जँ भरि दिन भीख माँगब तँ भरि पेट भोजनो नहि भऽ सकत! अन्तत्वोगत्वा, ई सोचैत अछि जे मधुरमनि जँ दू टा कथा कहैत अछि त' भोजनो दैत अछि एवं प्रेम सेहो। एहन किंकर्तव्यविमूढ़क स्थितिमे ओ बाटहिमे रुकि ककरो सँ गप्प करऽ लगैत अछि।

एतबेमे मधुरमनि रोटीकेँ खापरि मे दऽ हृदयमे

(3)

घटि जाइबला, बंसी जकाँ अपना दिसि घिंचि लेबऽबला स्वरसँ मोचनकेँ खसबा लए बजैलक। मुदा मोचन त' नहि छल। एकटा बच्चा सँ [illegible] अछि जे ओ स्टेशन दिसि गेल अछि। मधुरमनि अपनहुँ नूआक मोटरी लऽ कऽ स्टेशन दिसि विदा भऽ जाइत अछि, मुदा थोड़े दूर गेलाक पश्चात् मोचन भेट जाइत अछि। एहिठाम मधुरमनि एवं मोचनक गपमे पति-पत्नीक मधुर सम्बन्धक चित्र देखबामे अबैत अछि। मधुरमनि कहैत अछि—" की ई कलकत्तामे मोटरक डिरेवरी करत? एकरे बुते हेतै तिनसेरा कुड़हरि लऽ कऽ जारनि फाड़ल। ओ पँचमहला कोठामे पानि भरि-भरि पहुँचाओल?" मोचनक उत्तर छलैक—"अरे भीखे माङल हरत की ने?" एहि पर मधुरमनि जे स्वाभामिनी स्त्री छलीह, कहैत अछि—जे भिखमंगाक बहु भऽ कऽ हम एहि आँगनमे नहि रहि सकैत छी। हम अपन नैहर जाइत छी। मोचन ओकरा रोकैत अछि एवं दुनू गोटे घुरि अपन घर दिसि प्रेमपूर्वक विदा होइत अछि। एवं प्रकारेँ एहि मधुर विन्दु पर कथाक अन्त होइत अछि एवं पति-पत्नीक परस्पर प्रेम-भाव प्रदर्शित होइत देखल जाइत अछि।

प्रस्तुत कथामे श्री किरण जी एक सामान्य वर्गीय परिवारक पति-पत्नीक मानसिक द्वन्द्वताक चित्रण कयलनि अछि, जाहिमे हमरा ई देखऽ मे आएल अछि जे पति-पत्नीक सम्बन्ध केहन मधुर होइत अछि। एहि छोट-छीन घटनाकेँ श्री किरण जी जाहि स्वाभाविकता सँ चित्रित कयलनि अछि, ओ मैथिली कथा-साहित्यमे विशिष्ठ स्थान रखैत अछि। वर्णनक चातुर्य, चरित्र-चित्रणक विशेषता एवम् उत्तम कथानक एहि कथाक विशेषता थिक।

डॉ० पंकज कुमार
आदि कि [illegible]